सांसारिक अस्तित्व के दु:ख

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

चिन्ता और आकुलता

मनुष्य सदा वस्तुओं, पत्नी तथा पशुओं के लिए प्यासा रहता है। यह उसे निश्चित रूप से स्वार्थी बनाता है। स्वार्थीपन से मोह उत्पन्न होता है। जब वहाँ मोह होता है, तो वहाँ अहन्ता और ममता होती है। सारा कष्ट यहीं से प्रारम्भ होता है। सम्पूर्ण माया का चक्र यहाँ से घूमना प्रारम्भ होता है। मनुष्य अब दास बन जाता है। लोहे की कठोर जंजीरें अब उसके हाथों, पैरों, घुटनों में बाँध दी जाती हैं। वह अब मकड़ी अथवा रेशम के कीड़े की भाँति फँस जाता है। यह उसके स्वयं के लिए स्व-निर्मित जाल है।

एक शान्त कमरे में एक क्षण के लिए अकेले बैठ जायें। अन्वेषण करें, ध्यान करें, खोज करें। प्रसन्नता एक मानसिक स्थिति है। यह धन अथवा स्वामित्व पर निर्भर नहीं करती है। आपने वास्तव में देखा होगा कि बहुत अधिक धनी लोग बड़े दु:खी होते हैं, जब कि एक गरीब लिपिक बहुत प्रसन्न रहता है और एक साधु जिसके पास मात्र एक लँगोटी है, वह भावोत्कर्ष में नृत्य करता है।

आनन्द का उपभोग कामना की तुष्टि नहीं कर सकता। इसके विपरीत यह कामनाओं को उत्तेजित करता है, उन्हें तीव्र करता है और तृष्णा के द्वारा मन को उसी प्रकार बेचैन बनाता है, जिस प्रकार दीपक में घी या तेल डालने से लौ तेज हो जाती है। कामनाएँ जितनी कम होंगी, आनन्द उतना ही अधिक होगा। दूध कुछ लोगों को आनन्द देता है और कुछ लोगों को दु:ख देता है। दूध का चौथा कप उबकाई लाता है। यह ज्वर के समय आनन्द नहीं देता। इसलिए विषयों में आनन्द नहीं है, बल्कि यह मन की कल्पना अथवा प्रवृत्ति है।

आम मीठा नहीं है, बल्कि कल्पना मधुर है। स्त्री सुन्दर नहीं है, बल्कि कल्पना सुन्दर है। एक कुरूप स्त्री अपने पति को बहुत सुन्दर लगती है, क्योंकि उसकी कल्पना सुन्दर है। विषयों में एक कण के बराबर सुख है, लेकिन इनके साथ जो दु:ख मिश्रित है, वह पहाड़ के आकार का है।

विषय-सुख ललचाने वाला है। इसमें इतना वशीकरण है कि मनुष्य जब तक इसे प्राप्त नहीं कर लेता, तब तक वह बहुत प्रयत्न करता है। उसका मन चिन्ताओं से पूर्ण रहता है। वह सदा मायूस रहता है, क्योंकि उसे सन्देह रहता है कि वे उसे मिलेंगे कि नहीं? जिस क्षण उसे इन पर स्वामित्व प्राप्त हो जाता है, आकर्षण समाप्त हो जाता है। वह देखता है कि वह उलझन में है। अविवाहित दिन-रात अपने विवाह के बारे में विचार करता रहता है। जब विवाह हो जाता है, तो वह सोचता है कि वह बन्धन में है। वह अपनी पत्नी की अतिशय माँगों को पूरा करने में असमर्थ रहता है। वह घर से भाग कर जंगल में चला जाना चाहता है।

[illegible] व्यक्ति सोचता है कि यदि उसका एक पुत्र होगा, तो वह अधिक सुखी होगा। वह दिन-रात बेटे के लिए आकांक्षा करता रहता है। वह रामेश्वर, काशी आदि की तीर्थ-यात्रा करता है और विभिन्न धार्मिक कर्मकाण्ड करता है। लेकिन जब उसे पुत्र प्राप्त होता है, तो वह दु:खी हो जाता है। बच्चे को मिरगी के दौरे आते हैं और उसका सारा धन डाक्टरों से इसका इलाज करवाने में व्यय हो जाता है और उसका रोग ठीक भी नहीं हो पाता। यह सब माया की बाजीगरी है। यह सम्पूर्ण जगत् प्रलोभनों से पूर्ण है।

जब आपको विषयों की प्राप्ति नहीं होती, तो आप दु:ख का अनुभव करते हैं। वह मनुष्य जिसे चाय पीने की आदत है अथवा जिसे भोजन के उपरान्त फल अथवा दूध लेने की आदत है, जब उसे निश्चित समय पर फल अथवा दूध नहीं मिलता, वह बड़ा दु:खी हो जाता है। वह अपनी पत्नी और नौकर को बिना किसी कारण के क्रोध में आ कर झिड़कता है। कष्ट का कारण है सुख। मृत्यु का कारण है विषयी जीवन से प्रेम। यदि आप मृत्यु न चाहते हों, तो विषयी जीवन को त्याग दें। यदि आप दु:ख नहीं चाहते हों, तो समस्त विषय-सुखों को त्याग दें। समस्त प्रकार के फैशन एवं दुराचारी जीवन ने आपको भिखारियों का भिखारी बना दिया है। (क्रमश:)

(अनुवादिका : शिवानन्द राधिका अशोक)

भारतीय हिन्दू अनुभव में इष्टदेव

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

उस सर्वोच्च, अचिन्तनीय, अनुभवातीत परम सत्ता को श्रद्धापूर्ण प्रणाम है, जिसका प्रकटीकृत निज-स्वरूप दया और क्षमा का सागर है, न्यायशीलता, प्रेम और करुणा का अथाह सागर है। परब्रह्म परमात्मा के साकार रूप को प्राय: करुणासागर, कृपानिधान, दया-सागर कह कर सम्बोधित किया जाता है।

निराकार ब्रह्म भले ही अनुभवातीत सत्-चित्-आनन्द स्वरूप है; किन्तु हिन्दू दर्शन व सिद्धान्त की इतनी विलक्षणता नहीं है, जितनी भारतीय हिन्दू अनुभूति की है कि इसमें परम सत्ता को केवल भावातीत परम सत्य, अद्वितीय स्वरूप में ही अनुभव नहीं किया, प्रत्युत साथ-ही-साथ यह भी अनुभव किया कि वह अप्रकट सत्ता प्रकट भी हो सकती है।

सूचना

श्री कृष्ण जन्माष्टमी

श्री कृष्ण जन्माष्टमी उत्सव अर्थात् भगवान् श्री कृष्ण का प्राकट्य-दिवस शिवानन्द आश्रम, शिवानन्दनगर में **४ सितम्बर २००७** को मनाया जायेगा। इस अवसर पर श्री विश्वनाथ मन्दिर में लक्षार्चना-महाभिषेक तथा हवन, द्वादशाक्षर-मन्त्र (**ॐ नमो भगवते वासुदेवाय**) का अखण्ड कीर्तन, सन्दर्भ ग्रन्थों का पाठ, श्रीमद्भागवत-पारायण तथा अन्त में अर्धरात्रि को आरती आदि के साथ विशाल पूजा होगी। इस पूजा में सम्मिलित होने के लिए सभी भक्तों का स्वागत है। उन्हें अपने आने की पूर्व-सूचना '**महासचिव, दिव्य जीवन संघ, पो. शिवानन्दनगर २४९ १९२, जिला टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड**' को दे देनी चाहिए। जो स्वयं सम्मिलित न हो सकें, वे यदि '**व्यवस्थापक, श्री विश्वनाथ मन्दिर, पो. शिवानन्दनगर २४९ १९२, जिला टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड**' को पत्र द्वारा अपनी इच्छा सूचित कर देंगे, तो उनके नाम से भी पूजा की जायेगी।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

इच्छाओं, कामनाओं, अविवेक और अविचार के जाल में आबद्ध व्याकुल सच्चे जिज्ञासुओं के लिए वह निराकार ब्रह्म साकार भी हो सकता है।

अज्ञान के गड्ढे में गिर जाने पर जब मनुष्य अपनी भूल को समझता है, तो पश्चात्ताप करता और सहायता के लिए पुकारता है। अपनी अक्षमता और कमियों के कारण वह जिसमें गिरा हुआ है, उसमें से निकल नहीं सकता; इसलिए ऊपर से किसी को आ कर, झुक कर गड्ढे में गिर कर छटपटाते हुए को सहायतार्थ हाथ बढ़ा कर, पकड़ कर निकालना पड़ेगा।

किसी ने भगवान् का एक चित्र चित्रित किया है ह्नह्नएक दिव्य पुरुष, खुली लम्बी दाढ़ी, पुरातन, श्वेत, आयुविहीनह्नह्नहाथ आगे बढ़ाये हुए, एक उँगली से अपने मानव-परिवार की ओर इंगित करते हुए, उनका हाथ पकड़ कर रक्षा करने के उद्देश्य से आगे झुके हुए है। वह निराकार परब्रह्म, जिसका नाम परम दयालु है, यदि अनन्त प्रेम, दया, कृपा से पूर्ण न होता तो मनुष्य के हृदय में उसके प्रति इस प्रकार की भावना न होती कि वह उसकी रक्षा के लिए दौड़ कर आयेगा और सहायता करके उसे बचा लेगा। मनुष्य अथाह कष्ट में भगवान् को ही पुकारता है और वह पुकार का उत्तर भी देते हैं और रक्षा हेतु आते भी हैं।

अत: इस प्रकार प्राचीन भारतीय हिन्दू अनुभव की यह विलक्षणता है कि वह निराकार परब्रह्म, वह अनुभवातीत सत्ता और साकार इष्टदेवह्नह्नएक सापेक्ष सत्य, जिसके साथ व्यक्ति अपना निजी प्रिय आध्यात्मिक सम्बन्ध स्थापित कर सकता है, गुह्य सम्बन्ध बना सकता हैह्नह्नयह दोनों एक ही हैं।

श्रीमद्भागवत महापुराण की कथा केवल साकार इष्टदेव की रहस्यमयी सौन्दर्यपूर्ण, रंगीली और करुणापूर्ण लीला-कथाओं की ही वर्णनात्मक व्याख्या है। जहाँ-कहीं इसके प्रेम और दया-भाव प्रतिशोधपूर्ण क्रोध में दृष्टिगोचर होते हैं, वहाँ भी उसमें अन्तरनिहित दया ही होती है, जो क्रोध अथवा प्रतिशोध प्रतीत होती है।

यह सूक्ष्म विचार-बिन्दु भगवान् के नृसिंह अवतार में हिरण्यकशिपु के संहार की कथा द्वारा स्पष्टतया प्रतिपादित किया गया है। हिरण्यकशिपु का उदर विदीर्ण करने के पश्चात् नृसिंह भगवान् उसका हृदय भी अपने दोनों पंजों के तीक्ष्ण नखों द्वारा फाड़ डालते हैं। आप जानते हैं, क्यों? वह उस निकृष्ट के हृदय में कुछ ऐसा ढूँढ़ना चाहते थे जिसके कारण उसे भीषण नारकीय अग्नि में जाने से बचा पाने की सम्भावना हो जाये। क्या उसमें कुछ भी ऐसा सूक्ष्मातिसूक्ष्म दया या करुणा का अंश है, जो उसकी रक्षा करने में सहायक बन सकता है?

अत: प्रतीकात्मक रूप से वह चाहते थे कि कुछ ऐसा कारण मिल जाये कि वे उसे छोड़ सकें। कुछ ऐसा, जिसका अर्थ हो कि वह इतना अधिक दण्ड पाने का पात्र नहीं। वे कुछ ऐसा खोज रहे थे जिसके आधार पर वे अपनी दया, अपनी करुणा की वृष्टि कर सकें। इस प्रकार अपने इस दण्ड प्रतीत होने वाले, प्रतिशोध दिखायी देने वाले कार्य में भी वे कोई कारण, कोई युक्ति अथवा बहाना ढूँढ़ रहे थे, दया करने के लिए।

अत: प्राचीन भारतीय हिन्दू अनुभव में भगवान् साकार रूप में अवतरित होते हैं ताकि झुक कर, हाथ

बढ़ा कर हमें अपने स्व-रचित जाल के बन्धन, जिसमें हम आबद्ध हैं, से छुड़ा सकें। आत्यन्तिक सन्दर्भ में, भगवान् कभी दण्ड नहीं देते, भगवान् कभी विनाश नहीं करते। हम ही अपने कर्मों के द्वारा अपने ऊपर अग्नि प्रज्वलित करके उसमें स्वयं ही ईंधन भरते रहते हैं।

हिन्दी में एक कहावत है कि मनुष्य को न तो भगवान् से डरने की आवश्यकता है, न ही शैतान से। यदि भयभीत होना है तो अपने कर्मों सेह्लह्लकायिक, वाचिक और मानसिक कर्मों से हो (बन्दे न रब से डर न शैतान से डर, डरना है तो अपने काज से डर)। हमें अपने कर्मों के सम्बन्ध में जानकारी होनी चाहिए। यदि वह भले और शुभ हों, तो भयभीत होने का कोई कारण नहीं है। यदि वह विपरीत प्रकार के हैं, तब हम स्वयं के लिए भयंकर फल अर्जित कर लेते हैं।

दण्ड कोई अन्य नहीं देता। हम अपने लिए दण्ड स्वयं ही रच लेते हैं। अन्ततः हम ही अपने आध्यात्मिक विनाश की रचना करते हैं। यदि दुर्बुद्धि है तो यह हमारी नाशक बन जाती है। यदि सुबुद्धि है तो कृपा, मोक्ष और उद्धार अवश्यम्भावी हैं। ये उतने ही निश्चित और असन्दिग्ध हैं जैसे सूर्य का पूर्व में उदय होना और पश्चिम में अस्त होना।

अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः ॥

क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति।
कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति॥

(यदि कोई अतिशय दुराचारी भी अनन्य भाव से मेरा भक्त हो कर मुझको भजता है तो वह साधु ही मानने योग्य है, क्योंकि वह यथार्थ निश्चय वाला है। वह शीघ्र ही धर्मात्मा हो जाता है और सदा रहने वाली परम शान्ति को प्राप्त होता है। हे अर्जुन! तू निश्चय-पूर्वक जान कि मेरा भक्त नष्ट नहीं होता।)

इस प्रकार भगवान् वचन देते हैं कि मेरा भक्त नष्ट नहीं होता। यह भगवान् हैं! भगवान् कभी दण्ड नहीं देते। भगवान् से भयभीत होने जैसा कुछ भी नहीं है। वह तो प्रेम, दया, न्याय, पूर्णरूपेण भलाई, सम्पूर्ण शुद्धता और कृपा से पूर्ण हैं। किन्तु हम अपनी मूर्खता के कारण तथा सद्ग्रन्थों, सन्तों, ऋषि-मुनियों और गुरु जनों, जो हमारे सर्वोच्च शुभ-चिन्तक हैं, के दिव्य ज्ञानोपदेशों को ग्रहण न करने के कारण स्वयं अपने लिए ही कठिन और दुष्कर परिस्थितियाँ उत्पन्न कर लेते हैं।

अतः आओ, हम यह समझ जायें तथा प्रकाश और ज्ञान-प्राप्ति के लिए सद्ग्रन्थों की ओर उन्मुख हो जायें। हम ज्ञान और प्रकाश के पथ पर आगे बढ़ें और अपने ही सही कर्मों के द्वारा, अपना सही जीवन, दिव्य जीवन जीने के द्वारा स्वयं को धन्य कर लें। ऐसा ही हो!

(अनुवादिका : श्रीमती सुधा भारद्वाज)

जीव और ब्रह्म

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

हम चिर-स्थायी (नित्य) अस्तित्व की कामना करते हैं। हम मृत्यु का वरण नहीं चाहते। अस्तित्व का अभिप्राय ही यही है कि हम मरना नहीं चाहते। हम बुद्धिमान् कहलाना चाहते हैं। हम यह नहीं चाहते कि कोई हमें मूर्ख कहे। यह हमारे भीतर चित्त अथवा भातित्व की अपरिहार्यता (आवश्यकता) है और हम सुख चाहते हैं, दुःख नहीं। यह अन्तर्निहित प्रिय (Bliss) की प्रेरणा है। चिर-स्थायी अस्तित्व सम्भव हो तो शाश्वत अस्तित्वहहहयह सत अथवा अस्ति का तीव्र आवेग है। ज्ञान, विवेक, प्रकाश, बोध और वृत्तान्त (सूचना) ये सब चित्त अथवा भाति की [illegible] हैं। आह्लाद, तृप्ति, सुख की इच्छा [illegible] अथवा आनन्द के असीम आनन्द [illegible]

सत्-चित्-आनन्द का यह त्रिगुणात्मक मिश्रण है जो नाम और रूप के माध्यम से भी स्वयं को प्रकाशित करता है, उद्घाटित करता है; किन्तु हमें अपने जीवन में नाम और रूप की अभिलाषा तो नहीं है। विषयों अथवा नाम और रूप के सम्पर्क में हम अस्ति-भाति-प्रिय की कामना करते हैं। नाम-रूप के द्वारा ही हम सच्चिदानन्द की खोज करते हैं। हम सत्य का आविर्भाव (appearance) चाहते हैं। सापेक्ष (relative) में हम [illegible] को खोजते हैं, [illegible] सृष्टि में ढूँढ़ते हैं, संसार में ईश्वर का दर्शन चाहते हैं। यही तो हम कामना करते हैं। अपने समस्त क्रिया-कलापों में, वह चाहे आफिस जाना हो अथवा फैक्टरी का श्रम, कोई भी कार्य जो हम करते हैं, उसके पीछे उद्देश्य एक ही है, प्रयोजन एक ही है और वह है सब प्रकार के आन्तरिक तनावों से मुक्ति और असीम सन्तुष्टि की प्राप्ति।

अतः नाम-रूप-प्रपंच, ये सब विविधता और यह ब्रह्माण्ड अन्ततः वही ब्रह्म हैहहह'**सर्वं ह्येतद् ब्रह्म**'। आभूषणों में स्वर्ण की भाँति नाम-रूपों में सच्चिदानन्द अथवा अस्ति-भाति-प्रिय के ज्ञान द्वारा यह एकत्व स्थापित किया जा सकता है। आभूषण की आकृति, आभूषण का नाम स्वर्ण के अस्तित्व में बाधक नहीं है। आभूषणों का आकार-भेद कैसा भी क्यों न हो, स्वर्ण तो सबमें वही है। इस तथ्य में कोई विरोधोक्ति है क्या? समस्त आभूषण स्वर्ण हैं; क्योंकि वे सब स्वर्ण से निर्मित हैं। एवंविध, यह सब ब्रह्म हैहहह'**सर्वं ह्येतद् ब्रह्म**'। रचनात्मक ढाँचे (आकार) जो भी हों, वे उनमें निहित सारतत्त्व के संज्ञान में प्रतिरोध उत्पन्न नहीं कर सकते। सारे मिट्टी के पात्र मिट्टी से बने हैं। हम कह सकते हैं कि वे सब पात्र मिट्टी हैं। समस्त वृक्ष लकड़ी हैं, सब सागर जल हैं। इन सब में भेद सारतत्त्व की सत्ता में बाधक नहीं है। अनेकता सार को अस्वीकारती नहीं है। अनेकता भी सार है और इस विशाल ब्रह्माण्ड की अनेकता में हमें यह संशय नहीं करना है कि यह 'उसके' साथ एक कैसे हो सकता

विश्व-प्रार्थना

हे स्नेह और करुणा के आराध्य देव!
तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है।
तुम सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ हो।
तुम सच्चिदानन्दघन हो।
तुम सबके अन्तवासी हो।
हमें उदारता, समदर्शिता और मन का समत्व प्रदान करो।
श्रद्धा, भक्ति और प्रज्ञा से कृतार्थ करो।
हमें आध्यात्मिक अन्तःशक्ति का वर दो,
जिससे हम वासनाओं का दमन कर मनोजय को प्राप्त हों।
हम अहंकार, काम, लोभ, घृणा, क्रोध और द्वेष से रहित हों।
हमारा हृदय दिव्य गुणों से परिपूरित करो।
हम सब नाम-रूपों में तुम्हारा दर्शन करें।
तुम्हारी अर्चना के ही रूप में इन नाम-रूपों की सेवा करें।
सदा तुम्हारा ही स्मरण करें।
सदा तुम्हारी ही महिमा का गान करें।
तुम्हारा ही कलिकल्मषहारी नाम हमारे अधर-पुट पर हो।
सदा हम तुममें ही निवास करें।

स्वामी शिवानन्द

पूर्व अंक से आगे समीपस्थ और दूरस्थ, सन्निकट और दूर, दोनों समान कैसे हो सकते हैं!

इस तथ्य के दो पक्षों पर हमें विचार करना हैह्लह्लब्रह्माण्ड का द्रव्य और ब्रह्माण्ड में व्याप्त दूरियाँ। संसार की वस्तुओं के द्रव्य अपने आकार (रूप) के कारण विभिन्न प्रतीत होते हैं, निज सारतत्त्व के कारण नहीं। वन का ही दृष्टान्त ले लें। एक वृक्ष दूसरे वृक्ष के समान नहीं है। और तो और, एक ही वृक्ष का एक पत्ता भी दूसरे पत्ते से भिन्न है। लम्बे वृक्ष हैं, छोटे वृक्ष हैं, मोटे वृक्ष हैं, पतले वृक्ष हैं, इस प्रकार के वृक्ष हैं, उस प्रकार के वृक्ष हैं, न जाने कितने प्रकार के वृक्ष हैं। इतना भेद होने पर भी समस्त वृक्ष काष्ठ ही हैं। कुरसी और मेज की बनावट में कैसा भी अन्तर क्यों न हो, हैं तो सब वही काष्ठ, वही लकड़ी। ऐसा ही निरूपण सांसारिक वस्तुओं का किया जाता है। आकार भिन्न होते हुए भी तात्त्विक रूप से एक हैं। दूसरा पक्ष हैह्लह्लवे आकार में भिन्न क्यों दृष्टिगत होते हैं? सत्ता में यह आकारात्मक भेद देश-काल (space and time) के समाघात अथवा व्यवधान (interference) का परिणाम है। 'देश और काल'ह्लह्लइसे समझना अत्यन्त कठिन है। संसार के पदार्थों की व्याख्या करने में इसकी यदि अत्यन्त महत्त्वपूर्ण नहीं तो न्यूनाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका तो है ही। हम केवल देश और काल में ही पदार्थों का अवलोकन नहीं करते। प्रत्यक्ष (ज्ञान-सम्बन्धी) आध्यात्मिकता का यह एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है। हम सदा स्वयं को पदार्थों में विलीन रखते हैं और उनमें संलग्न देश-काल के सत्य की उपेक्षा करते हैं। सम्भव है हम विचार करते हों कि देश और काल असत् हैं, जिनकी उपेक्षा की जा सकती है, और हमारा प्रयोजन तो स्थूल विषयों से है। यह हमारा भ्रम है, मिथ्या-बोध है। आधुनिक वैज्ञानिक बतायेंगे कि देश और काल (space and time) किस प्रकार समान रूप से महत्त्वपूर्ण हैं। देश-काल पदार्थों की तात्त्विकता (सारतत्त्व) से यदि अधिक नहीं तो समान महत्त्व तो रखते ही हैं। (क्रमशः)

(अनुवादिका : श्रीमती गुलशन सचदेव)

स्वार्थ और तुच्छता से दु:ख भोगना पड़ता है

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

शिक्षक : मोहन, तुम आ गये? पिछले चार दिनों से कहाँ थे?

मोहन : जी, मैं अपनी बहन की शादी में अमृतसर गया था। आज ही सुबह वहाँ से वापस लौटा हूँ।

शिक्षक : क्यों तुम सुस्त और उनींदे दीखते हो? क्या तबीयत खराब थी?

मोहन : जी नहीं। तीसरे दर्जे के डिब्बे में बड़ी भीड़ थी। इसलिए रात-भर जागना पड़ा। एक झपकी तक नहीं ले सका। वैसे, यात्रा बड़ी आनन्ददायक रही।

गोपाल : मास्टर साहब, मोहन कह रहा था कि अमृतसर से लौटते समय कोई रोचक घटना घटी है। उसे सुनने की हमारी इच्छा है।

शिक्षक : अच्छा मोहन, तुम्हारे सारे साथी तुम्हारा अनुभव सुनना चाहते हैं। क्या तुम सुना सकते हो?

मोहन : अवश्य! अमृतसर स्टेशन पर जब गाड़ी आयी, तो तीसरे दर्जे के डिब्बे में बड़ी भीड़ थी। बड़ी कठिनाई से हम डिब्बे के अन्दर घुस सके। एक यात्री पूरी बर्थ पर अपना पैर फैलाये लेटा हुआ था। दरवाजे पर दो हट्टे-कट्टे पठान खड़े थे। उन दोनों ने उस व्यक्ति से उठ कर बैठने और दूसरों को जगह देने के लिए

आप हैं आनन्द और शान्ति के आगार

परमात्मा के सागर की हम एक लहर हैं। सूर्य के प्रकाश की हम एक किरण हैं। हम इनसान नहीं हैं, यह शरीर इनसान है और मन तो इनसान क्या, शैतान है। हम इन दोनों से अलग हैं। हम आत्मा हैं। किसी ने मानो कटोरे में चन्दन को घिस कर भरा हुआ है। इसके मायने क्या हैं? कटोरा सुगन्ध से भरा है। मैं आत्मा हूँह्नह्नयदि आपने ऐसा समझ लिया, तो जिस तरह चन्दन से सुगन्ध ही निकलती है, मधु से मिठास ही निकलती है, उसी तरह आपसे शान्ति ही निकलनी चाहिए, आनन्द ही बाहर निकलना चाहिए।

स्वामी चिदानन्द

 [illegible] ध्यान नहीं दिया। पठानों ने फिर एक बार उससे स्थान देने के लिए कहा, लेकिन वह बड़ी लापरवाही से बड़बड़ायाह्ह''मैं बहुत दूर का यात्री हूँ, इसलिए पैर फैलाने के लिए मुझे अधिक स्थान की आवश्यकता है।'' पठानों ने कहाह्ह''दूसरों को असुविधा दे कर इस तरह आराम करने का तुम्हें अधिकार नहीं है।'' यह कह कर वे दोनों उस व्यक्ति के पास आये और उसके दोनों ओर खड़े हो गये। फिर उन्होंने उसके शरीर को उठा कर नीचे फर्श पर रख दिया। वह व्यक्ति बहुत ही क्रोधित हुआ और पठानों को लाल-लाल आँखों से देखता रहा। उसने घूँसा तान लिया, किन्तु कुछ न कर सका। दूसरे सब यात्री चुप रहे, किन्तु वे मन-ही-मन हँस रहे थे और इस विनोद से बहुत प्रसन्न हुए। दोनों पठान और दूसरे दो यात्री उसकी बर्थ पर बैठ गये।

(सब बच्चे खूब हँसते हैं।)

शिक्षक : अच्छा बच्चो, मालूम पड़ता है कि तुम लोगों को यह घटना सुन कर खूब मजा आया। मैं तुम लोगों को चार शब्द बताता हूँह्ह'नीच बुद्धि', 'स्वार्थ', 'हठ', 'दम्भ'। सोच कर बताओ कि इस दुर्गुण वाले व्यक्ति के लिए कौन-सा शब्द उपयुक्त है। सोचने के लिए मैं तुम्हें दो मिनट का समय देता हूँ।

कृष्ण : जी, मेरे विचार से वह मनुष्य एकदम स्वार्थी था।

गोपाल : जी, वह केवल स्वार्थी ही नहीं था, नीच-बुद्धि भी था। यह तो साफ है कि उसकी गलती थी। अपनी भूल स्वीकार करने के बदले वह बेहद नाराज हो गया। इससे पता चलता है कि उसकी बुद्धि बड़ी नीच थी।

मोहन : जी, गोपाल ठीक कहता है। वह स्वार्थी और नीच-बुद्धि तो था ही, साथ ही दम्भी भी था; क्योंकि वह हठधर्मी पूरी सीट को घेरने को सही साबित करना चाहता था।

सोहन : जी, मेरे ख्याल से अब और अधिक कहने की जरूरत नहीं है। थोड़े शब्दों में कहना हो, तो वह इन सारी बुराइयों का सम्मिश्रण था। पठानों के बार-बार कहने के बावजूद वह उठा नहीं, इसलिए वह हठी भी था।

शिक्षक : बहुत खूब। प्यारे बच्चो, मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि तुम लोगों ने अपना दिमाग खूब लगाया है। तुम लोगों का यह प्रयत्न प्रशंसनीय है और थोड़ा-बहुत तुम सबका कहना सही है। यदि मैं इस विषय को और अधिक स्पष्ट करने के लिए संक्षेप में एक कहानी और सुनाऊँ तो आशा है, तुम सब उसको पसन्द करोगे।

सब बच्चे : जी हाँ। आपकी कहानी सुन कर हमें बड़ी खुशी होगी।

शिक्षक : ठीक है, सुनो।

एक बदमाश कुत्ता था। वह एक नाँद में, जिसके अन्दर सूखी घास भरी हुई थी, घुस गया। जो भी पशु पास आता, वह उस पर गुर्राता। किसी पशु को वह घास खाने नहीं देता था और न स्वयं ही खा सकता था। एक दिन घास खाने के लिए एक बैल आया। कुत्ता झट से भूँकने लगा और बैल की तरफ उछला। बैल बोलाह्ह''मुझे घास क्यों नहीं खाने देते? वह

तुम्हारे लायक तो है नहीं।'' कुत्ते ने जवाब दियाह्नह्न''भले ही मैं न खा सकूँ, पर दूसरा कोई भी उसे खा नहीं सकता।'' बेचारा बैल चला गया।

एक दिन एक गधे ने देखा कि नाँद में सूखी अच्छी घास भरी है। उसके मुँह में पानी भर आया। नाँद के पास जा कर चोरी से अपना मुँह घास से भर लिया। कुत्ता गुर्राया और उसने गधे को काटना चाहा; लेकिन गधा उलटा घूम कर दुलती झाड़ने लगा। कुत्ते के मुँह पर जोर की चोट लगी और रिरियाता हुआ वहाँ से भाग निकला। गधे ने पेट-भर घास खा ली और बाकी बैल के लिए छोड़ दी।

तो बच्चो, इन दोनों प्रसंगों को मन में दोहरा लो। इससे कुछ निश्चित निष्कर्षों पर पहुँच सकोगे।

गोपाल : जी, अब पूरी बात मेरी समझ में आयी। कुत्ता न स्वयं घास खा सकता था और न किसी को खाने देता था। तुच्छता का यह स्पष्ट उदाहरण है जो स्वार्थ से भी अधिक बुरा है।

शिक्षक : बच्चो, इसका अर्थ यह है कि स्वार्थ मनुष्य को नीचता की ओर धकेलता है। संसार में इस तरह के नीच लोग भरे पड़े हैं। नीच व्यक्ति दूसरों को सुखी और समृद्धिशाली देख कर जल-भुन जाता है। वह स्वयं तो मिठाई, फल वगैरह खायेगा, लेकिन अपने नौकर को वही चीज खाते देख कर उसका जी जलने लगता है। दूसरों को चाय या कोई दूसरी चीज देनी हो, तो उसमें भी वह बहुत फर्क करता है। अपने लिए बढ़िया चीजें रख लेगा और दूसरों को रद्दी चीजें बाँट देगा। नीच मनुष्य सम्पत्ति हड़पने के लिए अपने भाई को जहर खिला देने में भी संकोच नहीं करेगा। धोखा दे कर और झूठ बोल कर उसके धन पर अधिकार कर लेने में वह बिलकुल नहीं हिचकिचायेगा। धन एकत्र करने के लिए वह हर तरह का नीच कृत्य करने को तैयार हो जायेगा। वह भले ही बहुत बड़ा आदमी हो, समाज में उसका मान भी हो, लेकिन रेलवे स्टेशन पर दो पैसे के लिए कुली से झिक-झिक करने लगेगा। मरते हुए आदमी को बचाने के लिए वह अपने भोजन में से एक ग्रास भी नहीं देगा। उसका दिल पत्थर के समान कठोर होता है। उसे मालूम ही नहीं कि 'दान' क्या होता है।

क्या तुम जानते हो कि इसका उलटा सद्गुण कौन-सा है, जिसका विकास हर एक को करना है?

मोहन : जी, पिछले दिनों आपने कई सद्गुणों के नाम हमें बताये थे। मेरे विचार से इसके विपरीत गुण श्रेष्ठता, उदारता, दानशीलता और विश्व-प्रेम हैं।

शिक्षक : खूब। दिन-प्रति-दिन तुम बुद्धिमान् बन रहे हो। ठीक है। आज के लिए बस इतना ही है। अब हम खाने के लिए चलें। ईश्वर तुम्हारा कल्याण करे!

लड़के : मास्टर साहब! आपको बहुत धन्यवाद। **(अनुवादक : श्री त्रि. न. आत्रेय)**

मानव-शरीर की सार्थकता

स्वामी रामराज्यम्

एक घर में आग लग गयी। उस समय उस घर में कोई नहीं था। पड़ोस में तीन-चार झोपड़ियाँ थीं, जिनमें पास के कसबे में मजदूरी करके अपना पेट पालने वाले निर्धन परिवार रहते थे। आग लगते ही एक झोपड़ी से गन्दे-फटे कपड़े पहने हुए एक युवती तेजी से निकली और आग की चपेट में आये हुए उस घर की दीवाल पर चढ़ कर नीचे आँगन में कूद गयी। फिर उसने अन्दर से बन्द एक दरवाजे को खोल दिया। उस घर में कन्या का विवाह होने वाला था। विवाह के लिए लाया गया सामान एक ही जगह रखा हुआ था। युवती वह सामान उठा-उठा कर खुले हुए दरवाजे से बाहर फेंकने लगी। फिर वह जल्दी से बाहर आयी। उसकी झोपड़ी भी आग की लपटों से बच नहीं पायी थी। बाहर खड़े लोग पानी डाल कर झोपड़ी की आग बुझाने की कोशिश कर रहे थे और अन्दर का सामान बाहर फेंक रहे थे। वह तेजी से अपनी झोपड़ी की ओर भागी और ठिठक कर अपने अधजले कपड़ों और काले पड़ गये बरतनों को आँखें फाड़े हुए देखने लगी। हो-हल्ला सुन कर घर का मालिक अपने खेत से दौड़ा-दौड़ा आया और उस युवती से कहने लगाह्ह''मेरे घर का सामान बचा कर अपनी झोपड़ी जला डाली!

युवती ने आसमान की ओर देख कर हाथ जोड़े और बोलीह्ह''जैसी भगवान् की इच्छा। तुम्हारे घर में रखे हुए विवाह के सामान को आग निगल लेती, तो तुम्हें उसे फिर से जुटाना पड़ताह्हमैं इस बात को कैसे भूल जाती? मुझे डर था कि कहीं तुम्हारी बेटी को घर मिलते-मिलते छिन न जाये। मैं तो किसी भी झोपड़ी में रह लूँगी।''

घर के मालिक की आँखों में आँसू आ गये। रोते हुए उसने उस युवती के पैर पकड़ लिये। पैर छुड़ा कर युवती तेजी से पीछे की ओर हट गयी।

बच्चो, तुम्हें गन्दे-फटे कपड़ों में लिपटी वह युवती मिल जाये, तो तुम उसके विषय में क्या सोचोगे? क्या तुम्हें उसमें उसकी गन्दगी और गरीबी ही दिखायी पड़ेगी या और कुछ भी? तुम उसके अन्दर महामानव के दर्शन करना। महामानव कौन होता है? जो अपनों के लिए नहीं, दूसरों के लिए जीता है, जो दूसरों के सुख-दुःख के बारे में सोचता है और जो दूसरों का दुःख दूर करने के लिए नंगे पैरों दौड़ता है। भगवान् ने तुम्हें मानव का शरीर महामानव बनने के लिए दिया है। मानव-शरीर की सार्थकता इसी में तो है!

आराधना के अवसर पर विशेष छूट

१ जुलाई २००७ से ३० सितम्बर २००७ तक

पुस्तकों पर छूट

३०० रु. तक की पुस्तकों के आर्डर पर १०%

१००० रु. तक की पुस्तकों के आर्डर पर ३०%

१००० रु. से अधिक की पुस्तकों के आर्डर पर ३५%

सीडी, वीसीडी और कैसेटों पर छूट

किसी भी मूल्य/क्वांटिटि की खरीद पर २५%

('Chidananda—The fountain of Grace; Guru Purnima Darshan 2006' को छोड़ कर)

पैकिंग तथा डाक खर्चा अलग से है। सभी आर्डरों के साथ ५०% अग्रिम धन-राशि भेजें।

यह विशेष छूट केवल भारत में ही भेजने के लिए उपलब्ध है।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी, द शिवानन्द पब्लीकेशन लीग

पोस्ट : शिवानन्दनगर—२४९ १९२, जिला : टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखंड, भारत

फोन : (९१) ०१३५-२४३४७८०, २४३००४०; E-mail: bookstore@sivanandaonline.org

□ □ □

बाल-स्तम्भ

समाचार और प्रतिवेदन

मुख्यालय के समाचार

'शिवानन्द होम' में सेवा-सुश्रूषा

लक्ष्मणझूला के निकट तपोवन में स्थित 'शिवानन्द होम' में दिव्य जीवन मुख्यालय दीन-दु:खियों की सेवा करता आ रहा है। इस 'होम' में उन सभी लोगों के लिए चिकित्सा-सुविधाएँ उपलब्ध हैं जो बीमार तथा पीड़ित हैं, जो इस जीवन में अकेले पड़ गये हैं, क्षत-विक्षत हैं तथा विशेष रूप से ऐसे लोग जो समाज से उपेक्षित एवं तिरस्कृत हैं चाहे इन सबका कारण कुछ भी हो।

प्रभु की कृपा तथा पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के कृपापूर्ण स्पर्श से व्यक्ति विपत्ति, कष्ट एवं निराशा में आशा व आनन्द को प्राप्त कर सकता है। उनकी कृपा सर्वत्र व्याप्त है तथा सबका आलिंगन करती है, अपने गले लगाती है। जिन लोगों ने इस जीवन में धन-सम्पत्ति, प्रतिष्ठा, मान-सम्मान खो दिया है, ऐसे लोगों के चेहरों में भी उनकी कृपा से आनन्द और आशा की लहर बहती है।

'होम' के अन्तेवासियों एवं रोगियों में २८ महिलाएँ हैं। इनको पूरे वर्ष-भर आश्रम मुख्यालय परिसर के निकट इधर-उधर असहाय पड़े हुए पाया गया है। ये बीमार हैं, कुपोषणग्रस्त हैं, बिलकुल निर्धन हैं, एक भी पैसा पास में नहीं है, बेघर हैं तथा इनका कोई मित्र/दोस्त नहीं हैं। मन, दिल तथा शरीर से तड़पते-विलखते ये सड़क के किनारे सोते थे, चिकित्सा, दवा, उपचार के लिए वे चीख रहे हैं। शरीर में दर्द है, बुरी तरह आहत हैं, झुलसे हुए हैं, प्रताड़ित हैं तथा भूखे हैं। उनके मन में शंका व सन्देह हैं, चिन्तित हैं, तब भी वे थोड़ी सी मानवीय सहानुभूति के स्पर्श के लिए लालायित हैं, सान्त्वना का एक मधुर कृपापूर्ण शब्द ही इनके लिए बहुत काफी है। इनके दिल में एक गहरा कच्चा घाव हो गया हैह्नह्नयह घाव है निराशा, तिरस्कार तथा अकेलेपन का। जो उनके अवसाद, नीरसता तथा भटकाव एवं रात्रि में स्वप्न में भयावह चीत्कार के रूप में प्रकट हो रहा है। उनके शरीर की जटिल बीमारियों के इलाज हेतु उनको यहाँ भरती किया गया तथा उनकी उचित देखभाल व उपचार किया गया। अब समय है उनके पुनर्वास का। ये बहुत पुरानी बीमारियों से पीड़ित हैं, जैसे मिर्गी, मधुमेह, एच आइ वी का संक्रमण आदिह्नह्नइन रोगों का उपचार चलता रहता है।

कुछ महीने पहले यहाँ एक ७५ वर्ष की महिला रोगी को भर्ती किया गया। उसका शरीर बुरी तरह कुपोषणग्रस्त था। उसका मन इतना क्षुब्ध था कि वह चारों ओर इधर-उधर भटक रही थी, परेशानी से बड़बड़ा रही थी, पुराने पहनने के कपड़ों को उसने फाड़-फाड़ कर चिथड़े कर दिया था। कोई भी व्यक्ति यह नहीं समझ सका कि वह कहाँ से आयी है। ओफ!

लेकिन लगभग ७ महीने गुरुदेव की छत्रछाया में रह कर पवित्र शास्त्रों व भजनों का श्रवण किया। दवाई, उपचार, उचित आहार एवं रोज स्नान व साफ-सफाई करने से तथा अन्तेवासियों के साथ रहने से उनसे अपने घर तथा रिश्तेदारों के बारे में बातचीत करना शुरू कर दिया। यहाँ तक कि अब वह आगरा के अपने पड़ोसियों को भी याद करने लगी। भगवान् की अद्भुत कृपा से उसका पता मालूम हो गया, उसका पुनः परिवार से पुनर्मिलन हो गया, उसके परिवार के लोग पूरे साल से अधिक समय तक उसे खोजते रहे। खुशी व कृतज्ञता के आँसू छलक पड़े। सबमें पवित्र प्रसाद बाँटा गया। जय श्री राम!

''पतितों को उठाना, अन्धों को मार्ग-दर्शन करना, जो-कुछ अपने पास है उसे दूसरों में बाँटना, पीड़ित को सान्त्वना देना, दुःखी को खुश करना, अपने पड़ोसियों को अपनी ही आत्मा समझ कर प्यार करना और गौमाता, जानवरों, स्त्रियों तथा बच्चों की रक्षा करनाह्नह्नये सब मेरे आदर्श एवं उद्देश्य हैं।''

(स्वामी शिवानन्द)

''धन्य हैं दीन-दुःखियों की आत्माएँ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का ही है।'' (बाइबिल)

परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के उपाध्यक्ष, परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज 'स्वामी शिवानन्द मेमोरियल इंस्टिट्यूट ऑफ़ फाइन आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स, ईस्ट पंजाबी बाग, दिल्ली' के ट्रस्ट बोर्ड के अध्यक्ष (चेयरमैन) भी हैं। २९ मार्च २००७ को स्वामी जी ने एस. एस. एम. आई. ट्रस्ट बोर्ड की सभा में भाग लिया।

अप्रैल मास में स्वामी जी ने उड़ीसा राज्य में सांस्कृतिक यात्रा की। २ अप्रैल को स्वामी जी बालीगुआली के निकट बालीघाई में 'हरिहरानन्दा गुरुकुलम्' गये तथा उस आश्रम के स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज की पुण्यतिथि के कार्यक्रम में भाग लिया।

स्वामी जी को बालीगुआली गाँव की रामायण प्रचार समिति द्वारा श्री तुलसीकृत रामायण के नवाह्न पारायण का उद्घाटन करने के लिए आमन्त्रित किया गया था। स्वामी जी ने उस कार्यक्रम में भाग लेते हुए उस शुभ अवसर पर प्रवचन दिया।

कलाहांडी जिले की दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के निमन्त्रण पर स्वामी जी महाराज उस जिले की अन्य शाखाओं में भी गये। १० अप्रैल को स्वामी जी ने केसिंगा के मातृ कीर्तन मण्डल के सत्संग में भाग लिया तथा वहाँ उपस्थित भक्तों को आध्यात्मिक प्रवचन दिया और सायंकाल में केसिंगा शाखा के भक्तों द्वारा आयोजित जनसभा में सम्मिलित हुए। जिले के अन्य बहुत से भक्त भी इसमें आये हुए थे। आदरणीय श्री स्वामी शिवानन्द गुरुसेवानन्द जी महाराज भी इसमें सम्मिलित हुए। स्वामी जी ने इस अवसर पर प्रवचन दिया।

११ अप्रैल को भवानीपटना शाखा द्वारा आरम्भ किये जाने वाले 'स्वामी शिवानन्द बाल विद्यापीठ'

का स्वामी जी ने उद्घाटन किया। स्वामी जी ने वहाँ उपस्थित अध्यापकों, कर्मचारी वर्ग, अभिभावकों तथा मैनेजमैंट समिति के सदस्यों को सम्बोधित करते हुए प्रवचन दिया। सायंकाल में एक सार्वजनिक सम्मेलन था, जिसमें बड़ी संख्या में भक्त लोग एकत्रित हुए थे। स्वामी जी ने सत्संग में प्रवचन दिया।

उसी दिन अपराह्न में स्वामी जी ने जुगसाइपटना के लिए प्रस्थान किया और वहाँ चिदानन्द नीड़म् के दर्शन किये। यहाँ दिव्य जीवन संघ, भवानीपटना शाखा के तत्त्वावधान में एक विद्यालय और एक समाज सुधार केन्द्र कार्यरत हैं। भक्तों की सद्भावना और उत्तम कार्यविधि के कारण उस क्षेत्र के जनजातीय लोगों के लिए अत्यन्त उत्तम सेवा उपलब्ध करायी जा रही है। केन्द्र में रहने वाले कुछ निर्धन विद्यार्थियों की आवश्यकताओं का पूरा ध्यान रखा जा रहा है। वहाँ भगवान् जगन्नाथ जी, बलभद्र जी तथा सुभद्रा जी का मन्दिर भी है जिसे 'सुभद्रा पीठ' कहते हैं। इसके कारण स्थानीय लोगों को आध्यात्मिक दृष्टि से पर्याप्त लाभ हुआ है और उनमें भक्ति-भाव की वृद्धि में पर्याप्त सहायता मिली है, स्वामी जी ने वहाँ 'स्वामी शिवानन्द अतिथिशाला और पाठागार' की नींव रखी। स्वामी जी विद्यालय के बच्चों के सत्संग में सम्मिलित हुए और वहाँ प्रवचन दिया।

फिर स्वामी जी धर्मगढ़ गये। वहाँ स्वामी जी के स्वागत के लिए बड़ी संख्या में भक्त जन एकत्रित हुए थे जो कि प्रभु नाम संकीर्तन कर रहे थे। स्वामी जी उनके साथ नाम संकीर्तन फेरी में सम्मलित हुए।

१२ अप्रैल को स्वामी जी दिव्य जीवन संघ, कलामपुर शाखा गये। वहाँ के स्थानीय भक्त समूह ने वर्षा की फुहारों को अनदेखा करते हुए स्वामी जी तथा साथियों का अत्यन्त उत्साहपूर्ण स्वागत किया। पूज्य श्री स्वामी जी महाराज और आदरणीय श्री स्वामी शिवानन्द गुरुसेवानन्द जी महाराज ने शाखा द्वारा आयोजित सार्वजनिक सभा में भाग लिया। १३ अप्रैल को महिचाला दिव्य जीवन संघ द्वारा आयोजित महिचाला में सार्वजनिक सत्संग में भाग लिया और प्रवचन दिया। उसी दिन सायंकाल में दिव्य जीवन संघ अरेबेदा केन्द्र द्वारा आयोजित सार्वजनिक सत्संग में भी स्वामी जी सम्मिलित हुए। उपस्थित भक्त समुदाय को सम्बोधित करते हुए स्वामी जी ने प्रवचन दिये।

१४ से १६ अप्रैल तक स्वामी जी ने धर्मगढ़ में दिव्य जीवन संघ, धर्मगढ़ शाखा द्वारा आयोजित ९ वें क्षेत्रीय दिव्य जीवन सम्मेलन में भाग लिया। इस सम्मेलन में लगभग १५०० से २००० तक भक्तों और प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। स्वामी जी कार्यक्रम का शुभारम्भ किया तथा तीनों ही दिन अपराह्न और सायंकाल के कार्यक्रमों में भाग लिया तथा प्रवचन दिये। स्वामी जी ने 'दिव्य जीवन यापन और आध्यात्मिक साधना', 'दिव्य जीवन संघ के सदस्यों के लिए अनिवार्य साधना', 'आध्यात्मिक साधना में स्मरण रखने योग्य महत्त्वपूर्ण विषय' तथा 'भारतीय आध्यात्मिक संस्कृति' जैसे विषयों पर प्रवचन दिये। स्वामी जी ने अत्यन्त उत्साहपूर्वक बड़ी संख्या में आये हुए भक्तों से व्यक्तिगत रूप से भेंट भी की।

स्वामी जी १८ अप्रैल को छत्रपुर पहुँचे। वहाँ दिव्य जीवन संघ शाखा की ओर से तथा छत्रपुर के स्थानीय लोगों और वहाँ के जगन्नाथ मन्दिर की प्रबन्धक समिति की ओर से बड़ी संख्या में एकत्रित

हुए लोगों ने भव्य स्वागत किया। आदरणीय श्री स्वामी शिवानन्द गुरुसेवानन्द जी महाराज के साथ पूज्य स्वामी जी महाराज कारातली में विवेकानन्द शिशु मन्दिर गये और वहाँ के विद्यार्थियों और अध्यापकों को सम्बोधित करते हुए प्रवचन दिया। सायंकाल में स्वामी जी ने दिव्य जीवन संघ, छत्रपुर शाखा के सत्संग के कार्यक्रम में भाग लिया और उपस्थित विशाल भक्त समुदाय को सम्बोधित करते हुए प्रवचन दिये।

२० अप्रैल को स्वामी जी 'श्री माँ श्री ऑरबिन्दो इन्टेग्रल एजुकेशन सेंटर', उनके निमन्त्रण पर गये और वहाँ के विद्यार्थियों और अध्यापकों से भेंट की। स्वामी जी ने प्रबन्धक समिति के सदस्यों, अध्यापकों और विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए प्रवचन भी दिया।

स्वामी जी ने छत्रपुर के जगन्नाथ मन्दिर में भगवान् श्री श्री बालाजी के मूर्तिस्थापना समारोह में भाग लिया। मूर्तिस्थापना कार्यक्रम के अन्तर्गत होने वाले नाम यज्ञ कार्यक्रम में तथा पूर्णाहुति में भी स्वामी जी सम्मिलित हुए।

छत्रपुर के स्थानीय वाचनालय में दिव्य जीवन संघ शाखा द्वारा तथा स्थानीय प्रबन्धकों द्वारा एक अत्यन्त विशद् आध्यात्मिक गोष्ठी आयोजित की गयी थी। पूज्य श्री स्वामी जी महाराज ने आदरणीय श्री स्वामी शिवानन्द गुरुसेवानन्द जी महाराज के साथ इस सार्वजनिक कार्यक्रम में भाग लिया तथा एकत्रित विशाल जनसमूह में प्रवचन दिया, जिसे भक्त समुदाय ने अत्यन्त भली-भाँति ग्रहण किया।

जाजपुर जिले के बड़कुँआल ग्राम में भागवत सप्ताह आयोजित किया गया था। स्वामी जी २५ अप्रैल को बड़कुँआल गये और वहाँ दिव्य जीवन संघ के भागवत सप्ताह से सम्बन्धित सत्संग में सम्मिलित हुए तथा वहाँ प्रवचन दिये। २६ अप्रैल की सन्ध्या को भागवत सप्ताह की पूर्णाहुति के कार्यक्रम में भाग लिया तथा गाँव में होने वाले सत्संग में प्रवचन दिया। २७ अप्रैल को शाखा में होने वाली पादुका-पूजा में भी स्वामी जी सम्मिलित हुए।

उसी दिन स्वामी जी ने कटक के लिए प्रस्थान किया और वहाँ पहुँच कर श्री सुनील कुमार साहू के घर होने वाले दिव्य जीवन संघ शाखा के सत्संग में भाग लिया और वहाँ उपस्थित भक्तों को प्रवचन दिया।

उड़ीसा यात्रा के समय अन्य दिनों में स्वामी जी 'चिदानन्द हरमिटेज शान्ति आश्रम, बालीगुआली' में ही ठहरे, जो कि दिव्य जीवन संघ मुख्यालय का ही हिस्सा है। वहाँ भी स्वामी जी बीच-बीच में सत्संग में भाग लेते रहे। वहाँ के भक्तों से मिले और शान्ति आश्रम के आवश्यक कार्यों को भी देखते रहे।

वह अद्वय सत्ता, जिसकी मानव-समूह अल्लाह, खुदा, आहुर्मज्दा, ताओ के रूप में, परात्पर के रूप में पूजा करता है, जिस सत्ता को नास्तिक लोग अस्वीकार करते हैं, एक महासागर है जिसमें सभी धार्मिक धाराएँ प्रवाहित होती हैं। उसकी ही महिमा इंजील, कुरान, ग्रन्थसाहब तथा वेदों में गायी गयी है। उसकी ही प्रार्थना-भवनों, गिरजाघरों, मसजिदों तथा मन्दिरों में पूजा होती है। किन्तु उसका सबसे विशाल मन्दिर तो मानव-हृदय है। वह सबमें व्याप्त, प्रविष्ट तथा अन्तर्व्याप्त है। वही हमारी सत्ता का मूल तत्त्व है।

स्वामी चिदानन्द

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के प्रतिवेदन

अन्तर्देशीय शाखाएँ

१. सन्तों द्वारा शाखाओं की मुलाकात

मुख्यालय के कोई सन्त की शाखाओं को भेंट यह उनके लिए विशेष अवसर होता है। शाखाएँ विविध आध्यात्मिक कार्यक्रमों को सुआयोजित करके विशाल संख्या में उनमें प्रतिभागी होते हैं। शाखाओं ने इस प्रकार की कुछ मुलाकातों के निम्नानुसार अहवाल प्रेषित किये हैं।

चण्डीगढ़ : परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने पूज्य श्री स्वामी अद्वैतानन्द जी महाराज के सहित दिनांक २३-२४ मई को शाखा की भेंट की। श्रीमद्भागवतम् पर दो घण्टों के प्रवचन के पश्चात् एक घण्टे पर्यन्त प्रश्नोत्तर का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। पुनश्च दूसरे दिन की पूर्वाह्न सभा में उन पर रसप्रद विचार-विनिमय किया गया।

बड़कुँआल (उड़ीसा): परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज ने दिनांक २७ अप्रैल को इस शाखा की मुलाकात ले कर पादुका-पूजन में भाग लिया तथा एक भक्त के निवास-स्थान पर आयोजित विशेष सत्संग में उपस्थिति दी।

छत्रपुर (उड़ीसा): पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज ने दिनांक १८, १९ और २० अप्रैल को पूज्य श्री स्वामी शिवानन्द गुरुसेवानन्द जी महाराज सह इस शाखा की भेंट की। उन्होंने दिनांक १८ को श्री श्री जगन्नाथ मन्दिर में भगवान् श्री श्री वेंकटेश्वर की प्रतिमा का अनावरण-समारम्भ सम्पन्न करके अगले दो दिन विशाल सभाओं को सम्बोधित की।

रंगबेडा (उड़ीसा): शाखा ने परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज की शाखा की भेंट के दौरान दिनांक ३ फरवरी को एक विशेष सत्संग परिचालित किया।

खुर्जा (उत्तर प्रदेश): दिनांक २ और ३ अप्रैल को आदरणीय श्री स्वामी त्यागवैराग्यानन्द जी ने आध्यात्मिक प्रवचन दिये।

भद्रक (उड़ीसा): शाखा ने स्थानिक कारागार (जेल) की दो मुलाकातें आयोजित करके आदरणीय श्री स्वामी शिवचिदानन्द जी और आदरणीय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी के व्याख्यानों से निवासियों को लाभान्वित किया।

ढेंकनाल (उड़ीसा): आदरणीय श्री स्वामी गुरुप्रेमानन्द जी ने शाखा के साप्ताहिक सत्संग में भाग लिया।

२. विशेष अवसर

(क) श्री राम-नवमी

पुनीत श्री राम-नवमी को आयोजित विशेष कार्यक्रमों के कुछ अधिक अहवाल प्राप्त हुए हैं।

भंजनगर (उड़ीसा): वासन्तिक नवरात्रि की अवधि में ५० भक्तों द्वारा ९ दिवसीय श्री रामचरित मानस पारायण।

छत्रपुर (उड़ीसा): शाखा के सत्संग-भवन तथा श्री श्री जगन्नाथ मन्दिर के परिसर में अन्य एकह्ह्इस प्रकार दो, नव-दिवसीय पारायण, प्रवचन, लक्षार्चना सहित श्री राम-पूजा।

चेन्नै, वॉषरमेनपेट (तमिल नाडु): श्री गुरु, श्री सीतादेवी, श्री भगवान् राम और श्री भगवान् हनुमान जी की विशेष पूजा, १० घण्टों पर्यन्त श्री हनुमान चालीसा का संगीतमय पारायण, भजन-प्रस्तुति, अल्पाहार, प्रसाद-सेवन इत्यादि।

जयपुर (राजस्थान): वासन्तिक नवरात्रि-अवधि में दैनिक विशेष पूजा प्रभात में तथा श्री सुन्दरकाण्ड-पारायण सायंकाल में। श्री राम-नवमी को विशेष पूजा और प्रसाद-सेवन।

शेरगडा (उड़ीसा): नौ-दिवसीय पारायण।

सुनाबेडा (उड़ीसा): नौ-दिवसीय पारायण, पादुका-पूजन, हवन, सहस्र नामावली सहित अर्चना,

रामायण-स्वाध्याय इत्यादि के सहित श्री राम-नवमी को दिन-भर के कार्यक्रमों का आयोजन।

सुनाबेडा महिला शाखा (उड़ीसा): श्री हनुमान मन्दिर में नौ-दिवसीय पारायण तथा शाखा-प्रमुख श्रीमती कमल पाणिग्राहि माता जी द्वारा नौ-दिवसीय पारायण-कथा का जाहीर कार्यक्रम।

(ख) श्री हनुमान-जयन्ती

भीमकाण्ड (उड़ीसा): श्री हनुमान चालीसा का १२ घण्टों पर्यन्त अखण्ड पाठ।

बीकानेर (राजस्थान): श्री सुन्दरकाण्ड पारायण, श्री हनुमान चालीसा के १०८ पाठ, विशेष पूजा, शृंगार, आरती, प्रसाद-सेवन इत्यादि।

घाटपदमुर (छत्तीसगढ़): श्री हनुमान चालीसा के ५१ पाठ, १ घण्टा अखण्ड कीर्तन, विशेष पूजा।

गुमरगुण्डा (छत्तीसगढ़): श्री हनुमान चालीसा के १०८ आवर्तन, ३ घण्टों पर्यन्त अखण्ड कीर्तन, हवन इत्यादि।

गुड़गाँव (हरियाणा) : विशेष कार्यक्रमों का आयोजन।

जयपुर (राजस्थान): श्री हनुमान चालीसा के ११ आवर्तन, भजन, प्रसाद-सेवन इत्यादि।

सालेपुर (उड़ीसा): सहस्रनामार्चना सहित विशेष पूजा, प्रभात में पाठ तथा प्रवचन सहित एक विशेष सत्संग।

शेरगडा (उड़ीसा): विशेष कार्यक्रम।

सुनाबेडा (उड़ीसा): पादुका-पूजा, हवन, सहस्रनामार्चना सहित विशेष पूजा, स्वाध्याय, जप इत्यादि।

सुनाबेडा महिला शाखा (उड़ीसा): श्री हनुमान मन्दिर में, श्री हनुमान चालीसा के १०० आवर्तन।

नन्दिनीनगर (छत्तीसगढ़): ५० भक्तों द्वारा श्री हनुमान चालीसा के १२ घण्टों पर्यन्त पाठ।

नीमापड़ा (उड़ीसा): ब्राह्ममुहूर्त-सभा, पादुका-पूजन, श्री हनुमान चालीसा के १०८ आवर्तन, भजन-कीर्तन, आदरणीय स्वामी श्री रामेश्वरानन्द जी द्वारा प्रवचन, आरती, प्रसाद-सेवन।

(ग) उड़ीसा का नूतन वर्ष

उड़ीसा का नूतन वर्ष मेष संक्रान्तिह्नह्नजिसे महा विशु संक्रान्ति भी कहते हैंह्नह्नसे आरम्भित होता है। उड़ीसा की कई शाखाओं ने श्री हनुमान जयन्ती मनायी और उनकी गतिविधियाँ इसके पूर्व विदित की गयी हैं। नूतन-वर्ष के अन्य विशेष कार्यक्रम निम्नानुसार हैं।

भंजनगर (उड़ीसा): शाखा ने निज ३३६ वाँ 'साधना-दिन' मनाया। श्री सुन्दरकाण्ड के पाठ तथा श्री हनुमान चालीसा के १०८ आवर्तनों में ३०० भक्त प्रतिभागी हुए। मध्याह्न भोजन तथा सान्ध्य-सत्संग में भी उन्होंने भाग लिया।

छत्रपुर (उड़ीसा): सुन्दरकाण्ड का पाठ तथा श्री हनुमान चालीसा के १०८ आवर्तन।

साउथ बलाण्डा (उड़ीसा): प्रभात में पादुका-पूजन और ३ घण्टों पर्यन्त महामृत्युंजय मन्त्र का अखण्ड जप।

सालेपुर (उड़ीसा): ६ घण्टों के कार्यक्रमों में श्री हनुमान चालीसा के ११ आवर्तन, १ घण्टे पर्यन्त महामन्त्र संकीर्तन, भगवद्गीता पारायण और उसके प्रत्येक श्लोक के पश्चात् **'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'** मन्त्र के सम्पुट के पश्चात् हवन सहित महायज्ञ।

(घ) अन्य अवसर

बीकानेर तथा सालेपुर शाखाओं ने 'श्री आदि शंकराचार्य जयन्ती' को उनकी कृतियों के पाठ तथा 'श्री विवेक चूड़ामणि' का स्वाध्याय आदि सम्पन्न किये। परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज की जयन्ती को बल्लारि (कर्नाटक), गुमरगुण्डा (छत्तीसगढ़), जैपुर (उड़ीसा) तथा सालेपुर (उड़ीसा) शाखाओं ने विशेष कार्यक्रम आयोजित किये। अम्बाला (हरियाणा) तथा नन्दिनीनगर (छत्तीसगढ़) शाखाओं ने परम पूज्य श्री स्वामी प्रेमानन्द जी महाराज की जयन्ती मनायी।

श्री गंगा दशहरा के पावन पर्व पर गुमरगुण्डा शाखा ने १२ घण्टों पर्यन्त अखण्ड कीर्तन, गंगा जी की और शिवजी की विशेष पूजा और अभिषेक तथा हवन सम्पन्न किये।

उगादि के पर्व पर बल्लारि शाखा ने भगवान् श्री विनायक जी की शोभायात्रा निकाली। लइडाम् (आन्ध्र प्रदेश) शाखा की परिचालित 'उंजाल-सेवा' में २०० भक्त प्रतिभागी हुए। मोईरंग (मणिपुर) शाखा ने पारम्परिक मुख्य स्थानिक समारोह में सक्रिय भाग लिया। श्री महाशिवरात्रि को छत्रपुर शाखा द्वारा श्री रामायण का २४ घण्टे अखण्ड पारायण परिचालित हुआ। रंगबेडा (उड़ीसा) शाखा ने महामृत्युंजय मन्त्र के १ लक्ष अखण्ड जप आयोजित किये। गुमरगुण्डा शाखा ने दिनांक २९ अप्रैल को इस पिछड़ी जनजाति के प्रदेश के छात्रों के हेतु (एक छात्रालय का मकान) 'गुरुकुल भवन' के उद्घाटन के लिए एक विशेष समारोह सम्पन्न किया। भद्रक शाखा के वार्षिक-दिन के समारोह में आदरणीय श्री स्वामी शिवानन्द गुरुसेवानन्द जी महाराज ने उपस्थित रह कर प्रमुख पद से शोभा में अभिवृद्धि की।

अनेक शाखाएँ समीपवर्ती ग्रामों को समाविष्ट करने हेतु निज गतिविधियों का विस्तार करती हैं। बिष्णुपुर (मणिपुर) शाखा प्रतिमाह के प्रथम रविवार को ग्राम्य-विस्तार में चल-सत्संग आयोजित करती है। लइडाम् (आन्ध्र प्रदेश) शाखा के मासिक साधना-दिन में निकटवर्ती ग्रामों में से ६०० भक्तों ने भाग लिया। छत्रपुर तथा नीमापडा (उड़ीसा) शाखाएँ ग्रामों में चल-सत्संग आयोजित करती हैं।

३. ज्ञान-सत्र

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं की यह प्रणालिका है कि नियमित सत्संगों में स्वाध्याय को कुछ समय दिया जाये। उपरोक्त अहवाल के अनुसार 'श्री राम-नवमी' को श्री रामायण विषयक प्रवचन और पारायण अनेक शाखाओं ने आयोजित किये। इनके आधिक्य में निम्नानुसार शाखाओं ने कुछ विशेष स्वाध्याय-गतिविधियाँ सम्पन्न कीं।

बीकानेर (राजस्थान): पुरुषोत्तम माहावधि में श्री रामायण तथा श्रीमद् भागवतम् के पारायण।

गुड़गाँव (हरियाणा): दिनांक ५ से १५ अप्रैल पर्यन्त भजन-कीर्तन सहित श्री रामायण कथा।

जयपुर (राजस्थान): पूर्वाह्न में श्रीमद् भागवतम् के तथा अपराह्न में श्री शिव-पुराण के दैनिक स्वाध्याय। दिनांक २ से ९ अप्रैल पर्यन्त 'श्री रामायण-कथा'।

जैपुर (उड़ीसा) : दिनांक १८ से २४ अप्रैल पर्यन्त श्रीमद्भगवद्गीता ज्ञानसत्र। शाखा प्रमुख ने नगरपालिका कन्या माध्यमिक विद्यालय में दिनांक २७ अप्रैल को आध्यात्मिक प्रवचन किया।

सालेपुर (उड़ीसा): दैनिक स्वाध्याय-वर्ग।

वडोदरा (गुजरात): २२ से २७ पर्यन्त आध्यात्मिक प्रवचन।

४. योगासन-प्राणायाम

गान्धीनगर (गुजरात), खुर्जा (उत्तर प्रदेश) तथा सुनाबेडा (उड़ीसा) शाखाएँ महिलाओं तथा पुरुषों के लिए भिन्न समूहों में योगासन-प्राणायाम दैनिक वर्ग परिचालित करती हैं। बीकानेर, घाटपदमुर, गुमरगुण्डा तथा जयपुर शाखाएँ दैनिक योगासन-वर्ग सम्पन्न करती हैं।

तदुपरान्त, विशेष योगासन-तालीम-शिविरें निम्नानुसार आयोजित हुईं।

गान्धीनगर (गुजरात) : स्त्रियों के लिए, ३५ प्रतिभागियों को दिनांक १६ से २५ अप्रैल पर्यन्त तालीम दी गयी।

सालेपुर (उड़ीसा): दिनांक ८-९ मई : उनमें ६० कॉलेज प्राध्यापक प्रतिभागी हुए।

वडोदरा (गुजरात) : आदरणीय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी ने दिनांक १९ से १७ मार्च पर्यन्त, तालीमार्थियों की विशाल संख्या के कारण प्रातः तथा सायंकाल में वर्ग परिचालित किये।

बल्लारि (कर्नाटक): दिनांक ८ अप्रैल को ध्यान-योग शिविर आयोजित किया।

५. समाज-सेवा

(क) नारायण-सेवा

बारिपदा (उड़ीसा): शाखा कुष्ठरोगियों की एक संस्था के ८० मरीजों की आवश्यक औषधियों की पूर्ति करती है। शाखा ने दिनांक १२ अप्रैल को उनके भोजन-वितरण तथा एक वृद्धाश्रम के ४० स्त्री-निवासियों के भोजन-वितरण की व्यवस्था की।

गान्धीनगर (गुजरात) शाखा कुष्ठरोगियों की एक संस्था तथा अकिंचन मरीजों को आर्थिक सहाय करती है। माह में एक बार निर्धनों की भोजन-व्यवस्था की जाती है। खुर्जा (उत्तर प्रदेश) शाखा निर्धनों को निज मासिक सेवा नियमित रूप से देती है। जयपुर (राजस्थान) शाखा कुष्ठरोगियों के एक आश्रम को उसकी मासिक लगभग ८५ किलोग्राम कोरे राशन की आवश्यकता की नियमित रूप से पूर्ति करती है। ३०० निराश्रितों को दैनिक रूप से भोजन देती है। २४ अकिंचन विधवा स्त्रियों को रुपये १००/- की मासिक आर्थिक सहाय करती है। खाटिगुडा (उड़ीसा) शाखा मासिक साधना-दिन को निर्धनों को अन्नदान करती है। सुनाबेडा महिला शाखा (उड़ीसा) प्रति मंगलवार को 'नारायण-सेवा' सम्पन्न करती है। वडोदरा (गुजरात) शाखा शहर के सबसे अधिक बड़े अस्पताल के निर्धन तथा आवश्यक मरीजों को औषधियों का दैनिक वितरण करती है।

(ख) चिकित्सिकीय शिविर

साउथ बलाण्डा शाखा ने दिनांक २१ से २८ अप्रैल और दिनांक १२ मई को स्वास्थ्य शिविरें सम्पन्न कीं। १३३ मरीजों के परीक्षण किये गये और ७ चिन्ताजनक मरीजों को राज्य के स्वास्थ्य डिपार्टमेन्ट को त्वरा से पहुँचाये गये।

सुनाबेडा शाखा के प्रमुख, एक डाक्टर होने से, प्रति रविवार को शाखा परिसर में नि:शुल्क चिकित्सिकीय शिविरें आयोजित करके प्रतिमाह लगभग २०० मरीजों के इलाज सम्पन्न होते हैं।

(ग) चैरिटेबल औषधालय

अम्बाला (हरियाणा) शाखा के प्रमुख एक होमियोपैथिक डाक्टर होने से, दैनिक रूप से प्रात: तथा सायं दो भिन्न चैरिटेबल औषधालयों में निज सेवा समर्पित करते हैं। बरबिल् (उड़ीसा) शाखा 'शिवानन्द चैरिटेबल होमियोपैथिक औषधालय' चलाती है। प्रसिद्ध होमियोपैथिक डाक्टर मेघाणी जी गान्धीनगर (गुजरात) शाखा की माह में द्विवार मुलाकात लेते हैं। जयपुर (राजस्थान) शाखा में, डा. जे. डी. सक्सेना जी तथा डा. एस. एस. दलेला जी ने गत दो माहावधियों में २५४९ मरीजों के इलाज सम्पन्न किये। सालेपुर (उड़ीसा) शाखा में गत दो माहावधियों में ६८६ मरीजों के नि:शुल्क उपचार किये गये। शेरगडा (उड़ीसा) शाखा एक औषधालय चला रही है। वडोदरा (गुजरात) शाखा हर सप्ताह ४ दिन होमियोपैथिक औषधालय, सप्ताह में द्विवार आयुर्वेदिक औषधालय चला रही है तथा सप्ताह में एक बार एक्युप्रेशर उपचार उपलब्ध कराती है।

(घ) शैक्षणिक सेवा

बीकानेर (राजस्थान) शाखा की 'स्वामी चिदानन्द शैक्षणिक निधि' छात्रों की आर्थिक सहायता की पूर्ति करती है। 'स्वामी शिवानन्द शिष्यवृत्ति निधि' ८० छात्रों को प्रतिमाह ५०/१०० रुपये प्रदान करती है।

६. नियमित गतिविधियाँ

दिव्य जीवन संघ की कुछ शाखाएँ पूजा, पादुका-पूजा, स्वाध्याय, सत्संग, भक्तों के निवास-स्थानों पर चल-सत्संग, मातृ-सत्संग, बाल-सत्संग, पुनीत प्रसंगों पर विशेष सत्संग, मातृ-सत्संग, उभय एकादशियों को तथा संक्रान्तियों को विशेष सत्संग, मासिक 'शिवानन्द-दिन', 'चिदानन्द-दिन' को पादुका-पूजा, स्वाध्याय, एकादशियों और संक्रान्ति दिनों को विशेष सत्संग, महामृत्युंजय मन्त्र के १२ घण्टों पर्यन्त जप अथवा अन्य मन्त्र के जप, श्रीमद् भगवद्गीता का पाठ, श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्रम्, श्री ललिता सहस्रनाम स्तोत्रम्, श्री सुन्दरकाण्ड और श्री हनुमान चालीसा, अखण्ड कीर्तन आदि परिचालित करती हैं। आधिक्य में, उपरोक्त शाखाओं के प्रतिवेदनों के अतिरिक्त अन्य शाखाओं की नियमित

गतिविधियों के विषय में अहिवारा (छत्तीसगढ़), बाँसवाड़ा (राजस्थान), भिलाई (छत्तीसगढ़), भौंगीर (आन्ध्र प्रदेश), लुधियाना (पंजाब), नलगोंडा (आन्ध्र प्रदेश), वाराणसी (उत्तर प्रदेश) के अहवाल प्राप्त हुए हैं। अन्य निम्नानुसार शाखाओं की गतिविधियाँ निम्नानुसार हैं।

गूडूर (आन्ध्र प्रदेश): प्रति रविवार के साप्ताहिक सत्संग में 'श्रीमद् भागवतम्' विषयक प्रवचन समाविष्ट हैं।

गुड़गाँव (हरियाणा): शाखा प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग, प्रति सोमवार को मातृ-सत्संग, प्रति मंगलवार को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण, एकादशियों को कथा और हवन, पूर्णिमा को कथा और भजन-कीर्तन, प्रति माह अन्तिम रविवार को भण्डारा।

नई दिल्ली, वसन्त विहार : इस नूतन शाखा ने भक्तों के निवास-स्थानों पर आयोजित और सम्पन्न रविवार के सत्संगों को सुन्दर और अति उत्साही प्रतिभाव पाया है। उनमें प्रति माह प्रथम रविवार को सुन्दरकाण्ड पारायण और तृतीय रविवार को स्वाध्याय समाविष्ट हैं।

रायगढ़ (छत्तीसगढ़): साप्ताहिक सत्संग प्रति सोमवार को आयोजित होते हैं।

रंगबेडा (उड़ीसा): शाखा के दैनिक कार्यक्रमों में प्रभात में पूजा और सायं-सत्संग के अतिरिक्त शाखा प्रति गुरुवार को साप्ताहिक सत्संग, प्रति शुक्रवार को मातृ-सत्संग, प्रति रविवार को चल-सत्संग तथा मासिक पादुका-पूजा भी सम्पन्न करती है।

विदेशी शाखाएँ

हांगकांग : शाखा का मासिक सत्संग माह के द्वितीय शनिवार, दिनांक १४ अप्रैल को आयोजित हुआ। पूज्य गुरुदेव के उपदेश विषयक प्रवचन तथा अन्य कार्यक्रमों के अनुसरण में १ घण्टा महामृत्युंजय मन्त्र-जप किया गया। उनमें ४४ भक्त प्रतिभागी हुए। शेष शनिवारों के दिनों को महामन्त्र का जप १ घण्टा सम्पन्न होता है। ६३ भक्तों ने अप्रैल माह में भाग लिया। योगासन-प्राणायाम-ध्यान वर्ग शाखा का नियमित कार्यक्रम है। ८ वर्गों में १२७ तालीमार्थी थे। शाखा अन्य संस्थाओं में भी योग-शिक्षक प्रतिनिधि के रूप में प्रेषित करती है।

साओ पालो (ब्राजील): शाखा ने प्रति शुक्रवार को २ घण्टों के साप्ताहिक सत्संग तथा प्रति रविवार को चल-सत्संग आयोजित किये। शाखा मुख्यालय के सत्संग के क्रम का ही अनुसरण केवल नहीं करती, किन्तु गुरुदेव के उपदेश का भी अति उत्साह से प्रसार करती है एवं प्रति रविवार के अपराह्नों में २ घण्टों के प्रवचन आयोजित करती है। शाखा के चार केन्द्र हैं तथा उन सबमें नियमित योगासन-वर्ग परिचालित किये जाते हैं। शाखा ने दिनांक ५ मई से पाँचवाँ शिवानन्द योग-वेदान्त अध्यापकों के अभ्यास-वर्गों का प्रारम्भ किया ?

ॐ

ईश्वर निर्गुण ब्रह्म की अवस्था में रह कर चाहे जितना काम कर सकता है; पर उसकी निर्गुण ब्रह्म की चेतना नष्ट नहीं होती। माया पर उसका पूरा अधिकार होता है। अवतारपुरुष भी अपने मूल स्वरूप की रक्षा करते हुए काम कर सकता है; परन्तु सप्तम अवस्था में रहने वाला ज्ञानी काम नहीं कर सकता। (प्राचीन रुढ़िवादी मत)।

छठी या सातवीं भूमिका में रहने वाला ज्ञानी लोकसंग्रह नहीं कर सकता। वह सदा ब्रह्म में लीन रहता है। यदि वह लोक-संग्रह करना चाहे तो उसे चौथी या पाँचवीं भूमिका में उतरना पड़ेगा। (प्राचीन रुढ़िवादी मत)।

ज्ञानी की चैतन्यावस्था दोहरी होती है। छठी भूमिका में रहते समय अपने स्वरूप में रह कर ही काम कर सकता है। निम्न भूमिका में आना उसके लिए आवश्यक नहीं है। (चोरनारी-दृष्टान्त) जिस प्रकार कौआ एक ही पुतली को दोनों ओर घुमा कर दोनों आँखों से देख सकता है वैसा ही। (नवीन मत)।

ब्रह्मज्ञान प्राप्त होते ही जीवन्मुक्त लुप्त हो जाता हो, ऐसी बात नहीं है। यदि ऐसा होता तो फिर साधकों को धार्मिक उपदेश कैसे मिलते? यह प्रकट है कि जीवन्मुक्तों से साधक मार्ग-दर्शन प्राप्त करते हैं।

दूध से दूध पानी से पानी मिल कर जैसे एक रूप हो जाते हैं वैसे ही जीवन्मुक्त आत्मज्ञान प्राप्त करने पर उस आत्मा से एक रूप हो जाता है। इसमें संशय नहीं है। वामदेव, जड़भरत, मन्सूर, शम्सतबरेज, मदालसा, चुडाला आदि ने आत्मा के साथ एकरुपता प्राप्त कर ली थी। वे अपने पीछे अपने अनुभवों और उपदेशों को विश्व की पीडित मानवता के लिए छोड़ गये हैं।

जिस प्रकार कपूर गल कर अग्नि के साथ एकरूप हो जाता है वैसे ही ज्ञानी का मन भी गल कर ब्रह्म के साथ एक रूप हो जाता है।

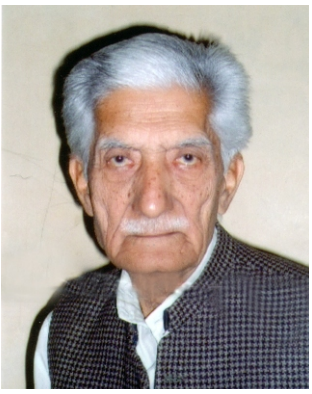

पावन-स्मृति में

दिव्य जीवन संघ परिवार के सक्रिय सदस्य तथा निष्कपट साधक श्री विश्वनाथ सेठ का देहावसान ५ जून २००७ को हो गया। वह दिव्य जीवन संघ शाखा, लखीमपुर-खीरी के संरक्षक थे। उनके मार्ग-निर्देशन में यह शाखा कई वर्षों से अनेकानेक आध्यात्मिक कार्यक्रम आयोजित करती रही है।

हम दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए भगवान् तथा गुरुदेव पूज्य श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज से प्रार्थना करते हैं। **दिव्य जीवन संघ**

आत्मानुभूति-प्राप्त ज्ञानी आत्मा के साथ एकात्मक हो जाता है। वह साक्षात् ब्रह्म ही बन जाता है। ज्ञानाग्नि के द्वारा उसके तीनों शरीर जल जाते हैं। बाहर से देखने वालों को उसका भौतिक शरीर दिखता है, पर ज्ञानी की अपनी दृष्टि में कोई शरीर नहीं है; क्योंकि उसका ब्रह्म के साथ तादात्म्य होता है।

जीवन्मुक्त आध्यात्मिक शक्ति का विद्युत्-गृह है। वहाँ से विश्व के कोने-कोने तक शक्ति की तरंगे प्रवाहित होती हैं। उसके समक्ष बैठो। आपके सारे संशय स्वत: दूर हो जायेंगे। आप एक विलक्षण आनन्द और स्फूर्ति का अनुभव करोगे।

कितना महान् आश्चर्य है! इन जीवन्मुक्तों ने कितना पुण्यकर्म किया होगा! जीवित रहते हुए भी वे जीवन से मुक्त हो जाते हैं। वे धरती पर साक्षात् परमेश्वर हैं। उनमें जितनी तेजस्विता है! उनका मन सदा अक्षुब्ध रहता है। जहाँ कहीं भी वे जायें उनका प्रभाव लोगों पर पड़ता है। वे बोलें नहीं, अब भी मौन के द्वारा ही साधकों को उपदेश देते हैं। उन उन्नत आत्माओं को नमस्कार!

ज्ञान बड़ी शक्ति है। जो वैद्य दवावों का ज्ञान रखता है; शरीरयन्त्र, उसकी प्रक्रियाओं, रोगों, निदानों और विचारणोपायों को जानता है, वह बड़ा शक्तिशाली व्यक्ति होता है। उसका प्रभाव सहस्रों व्यक्तियों पर पड़ता है। कानूनों का ज्ञान रखने वाले वकीलें बड़ी शक्ति होती है। सेनापति और सेनाध्यक्षों में, जो कि युद्धतन्त्र का पूर्ण ज्ञान रखते हैं, बड़ी शक्ति होती है। उनके सामने सारी सेना एकदम शक्तिमयी हो जाती है और उनके आदेश से मर मिटने को तैयार हो जाती है। पुलिस के इंगित मात्र से सड़क पर चलने वाली गाड़ियाँ रुक जाती हैं। जैसे अग्नि से उष्णता को अलग नहीं किया जा सकता वसे ही ज्ञान से शक्ति को अलग नहीं किया जा सकता। माया का अधिष्ठान जो ब्रह्म है, वह सारे ज्ञानों का भण्डार है। ब्रह्म का ज्ञान रखने वाला व्यक्ति बहुत ही शक्तिशाली होता है। उसकी इच्छाएँ सत्संकल्प से होती हैं, अत: पूरी हो जाती हैं।

ज्ञानी में मांस आदि तामस आहार को सात्त्विक रूप में बदल देने की शक्ति होती है। वह माँस को हलवा बना सकता है। वह संसारी मनुष्यों की तरह सुख या स्वाद के लिए कुछ नहीं खाता है। उसके मन पर किसी वस्तु की छाप नहीं पड़ती है। वह सदा साक्षी रहता है। वह अपने शरीर, मन और इन्द्रियों से मुक्त रहता है। वह सदा अन्तरात्मा से आनन्द प्राप्त करता रहता है। उसको ऐसा कभी नहीं लगता कि उसने बढ़िया पकवान खाया है। उसकी स्थिति अनिवर्चनीय है। उसकी स्थिति का अनुमान सभी नहीं लगा सकते।

कानपुर के पास एक योगी रहती था। उसके पास कई सिद्धियाँ थीं। वह चिथड़ों में घूमता रहता था। वह अवधूत की स्थिति में था। एक बार एक विदेशी अधिकारी प्रवास पर जाते हुए उस ग्राम के मार्ग से जा निकला। उसने उस योगी को शिर पर सामान ढोने का आदेश दिया। वह अधिकारी सामने घोड़े पर सवार हो कर जा रहा था। उसने पीछे मुड़ कर देखा तो देखता है उस मंगलदास (योगी) के शिर से तीन फुट की ऊँचाई पर वह सामान अधर में चल रहा है। अधिकारी को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह घोड़े पर से उतरा, सन्त को प्रणाम किया और अपनी भूल के लिए क्षमा-याचना की।

जीवन्मुक्त समझ जाता है कि वह मुक्त है। उसका फिर पुनर्जन्म नहीं है। वह यह समझ जाता है कि उसका सारा कर्तव्य पूरा हो गया है, किसी भी काम के लिए उसे फिर इस संसार में आना नहीं पड़ेगा। उसने जो-कुछ पाना था सब पा लिया है, अब और कुछ जानने या पाने को बाकी नहीं है। उसने सर्वोत्कृष्ट ज्ञान पा लिया है।

जीवन्मुक्त के लिए इस संसार की सत्ता नहीं रह जाती है। वह सदा सर्वत्र ब्रह्म को ही पहचानता है। सामान्य मनुष्य जब यह जान जाता है कि यह रस्सी है साँप नहीं, यह मृगतृष्णा है जल, नहीं, तो फिर वह रस्सी या मृगमरीचिका को देख कर भ्रम में नहीं पड़ता है। उसी प्रकार जीवन्मुक्त के सामने यदि सारा विश्व दोबारा भासता भी है तो वह भ्रान्त नहीं होता है। यदि संसार उसे दोबारा भासता भी है तो वह द्वन्द्वों का, मानसिक क्लेश, पीड़ा और शोक का पहले वाला संसार नहीं रहता है, वह आपत्तियों और कष्टों का कारागार नहीं रहता है। दु:खों, कष्टों से भरा हुआ संसार अब सच्चिदानन्द में बदल गया है। उस सर्वव्यापी आत्मा के ज्ञान के कारण सारी बाधाएँ, सारे भेद, सारी विशेषताएँ और सारी द्वैत भावनाएँ समाप्त हो गयी हैं। उसकी दृष्टि विश्वदृष्टि बन गयी है। आत्मानन्द और आत्मज्ञान में वह आनन्दित रहता है। अपनी ही आत्मा में वह प्रसन्न रहता है। इसीलिए उसमें कोई बाधा नहीं डाल सकता। उसकी स्थिति अवर्णनीय है।

लोगों को यह मालूम रहता है कि उनके पैर में एक पुराना फटा जूता लटका हुआ है तथा उनका पैर उस जूते से भिन्न है। इसी तरह ज्ञानी अपने जर्जर शरीर को देख कर यह अनुभव करता है कि वह उससे लटका हुआ एक फटा-पुराना खोल है और वह स्वयं ब्रह्म है तथा उस शरीर से सर्वथा भिन्न और पृथक् है।

शराबी शराब के नशे में जब चूर रहता है उस समय उसे यह भान नहीं रहता कि कपड़ा उसके कन्धे से नीचे लटक रहा है; इसी प्रकार ब्रह्म के नशे में चूर ज्ञानी को इस देह का भान नहीं रहता है।

ब्रह्मज्ञानी को भी दु:ख होता है, फिर संसार व्यक्ति के और उसके दु:ख में अन्तर है। (प्राचीन वेदान्त-मत)

दृश्य जगत् के बाह्य रूप को जीवन्मुक्त देखता तो है, पर उसका अनुभव भिन्न प्रकार का है। उसका अनुभव है कि सारा विश्व उसके आत्मा में है। उससे मन में उस संसार का मिथ्यात्व निश्चित हो चुका है।

स्वप्न में मनुष्य राजा बनता है, सभी वांछनीय भोगों को भोगता है, कुछ काल पश्चात् शत्रु से पराजित हो कर वन में जाता और वहाँ कठोर तपस्या करता है। फिर वह स्वप्न देखता है कि वह भिखारी है। आधे घण्टे के समय में मानो वह अस्सी वर्ष जीया है, ऐसा अनुभव करता है। वह स्वप्न देखता है कि उसे साँप ने काट लिया है और वह मर गया है। अब वह भय से अपनी आँखें खोलता और उसे पता चलता है कि यह सब-कुछ स्वप्न था। जैसे जागने पर मनुष्य के पदार्थों को नहीं देखता है, वैसे ही ब्रह्मज्ञान प्राप्त कर लेने पर ज्ञानी संसार को नहीं देखता है।

ज्ञानी समस्त संसार को अपने में ही स्थित देखता है और सबको आत्मा ही मानता है।

दिन में सूर्य प्रकाश देता है। चाँद और तारे रात को प्रकाश देते हैं। इस प्रकाश को देखने का साधन क्या है? एकमात्र आँख से ही प्रकाश देखा जा सकता है। अन्धे को प्रकाश की कल्पना नहीं होती है। जिस साधन से यह जाना जा सकता है कि आँखें खुली हैं या बन्द? बुद्धि से। आँखों को भी बुद्धि से शक्ति मिलतीं। यदि बुद्धि न होती तो आँखों से सूर्य का प्रकाश देख न पाते। उस बुद्धि को भी प्रकाश देने वाला कौन है? आत्मा। वह प्रकाशों का प्रकाश है, स्वयंज्योति है। मैं वह हूँ। वहाँ मैं हूँह्नह्न**'तत्र अहम्।'**

जीवन्मुक्त कहता हैह्नह्न''मैं पृथ्वी हूँ। मैं पृथ्वी में हूँ। मैं जल हूँ। मैं जल में हूँ। मैं अग्नि हूँ। मैं अग्नि में हूँ। मैं वायु में हूँ। मैं पुष्प हूँ। मैं वृक्ष हूँ। मैं स्त्री हूँ। मैं स्त्री में हूँ। मैं बुद्धि हूँ। मैं बुद्धि में हूँ। मैं सागर हूँ। मैं सागर में हूँ। मैं प्रकट-रूप विराट् हूँ। मैं अन्तर्यामी हिरण्यगर्भ हूँ। मैं ब्रह्म हूँ।

''मैं जब स्वयं ब्रह्मस्वरूप हूँ तो किसको प्रणाम करूँ? मेरे सिवा जब कुछ भी नहीं है तो कौन किसको सम्मान दे, कौन किसको प्रणाम करे? मैं उस महान् पुरुष को जानता हूँ जो सूर्यवत् प्रकाशमान् है,जो अन्धकार (अविद्या) से परे है। उसको ही जानने से मृत्यु जीती जा सकती है। मुक्ति का और कोई दूसरा उपाय नहीं है।

''मैं रेत के एक कण में विश्व को, जंगली पुष्प में स्वर्ग को, अपनी हथेली में अनन्त रूप को घण्टेभर में नित्यता को देखता हूँ।

''मुझमें ही सृष्टि का उद्भव है,
''मुझमें ही अखिल ब्रह्माण्ड स्थित है,
मुझसे ही सह लय होता है।
मैं स्वयं कालातीत ब्रह्म है।
शिवोऽहम्,शिवोऽहम्,शिवोऽहम्॥
न मैं यह शरीर हूँ, न यह मन हूँ।
चिदानन्दस्वरूप: शिवोऽहम्॥

''मैं सभी शरीरों में आनन्द लेता हूँ। मैं सभी शरीरों में दु:ख भोगता हूँ। मैं सभी आँखों से देखता हूँ। सभी हाथों से काम करता हूँ और सभी कानों से सुनता हूँ।''

यह ज्ञानी का अनुभव है। अधिक पुस्तकों का अध्ययन आवश्यक नहीं है। उपर्युक्त विचारों का सतत चिन्तन करो। इसे शीघ्र ही आत्मानुभूति प्राप्त होगी।

ज्ञानी कहता हैह्नह्न''मैं सर्वरूप हूँ।'' ''मैं सर्व में हूँ।'' वह ब्रह्म के साथ तादात्म्य अनुभव करता है। सारा ब्रह्माण्ड ब्रह्म में हिलोरें ले रहा है। इसलिए वह अनुभव करता हैह्नह्न''मैं सर्वरूप हूँ। सारे नाम और रूप मुझसे भिन्न नहीं हूँ।'' 'मैं' से विचार को अलग नहीं किया जा सकता; अत: यह उपयुक्त होगा कि 'मैं सर्वस्व हूँ'

२

आत्मिक शक्ति व्यक्ति में सभी क्षमताएँ विद्यमान हैं; उसमें ज्ञान है, उसके अन्दर शान्ति है, पवित्रता है। उसमे अपार शक्ति निहित है। वह निज-स्वरूप पहचान कर, अपनी चेतना को उस पर स्थापित करके जो भी कार्य करेगा, वह पूर्ण तथा सफल होगा। आत्मा के अन्दर से जो शक्ति निकलती है, उसके सम्मुख संसार की ऐसी कोई भी भौतिक शक्ति नहीं है, जो उस आत्मिक शक्ति पर विजय प्राप्त कर सके, अधिकार प्राप्त कर सके।

ह्नह्नस्वामी चिदानन्द

आप हैं आनन्द और शान्ति के आगार

परमात्मा के सागर की हम एक लहर हैं। सूर्य के प्रकाश की हम एक किरण हैं। हम इनसान नहीं हैं, यह शरीर इनसान है और मन तो इनसान क्या, शैतान है। हम इन दोनों से अलग हैं। हम आत्मा हैं। किसी ने मानो कटोरे में चन्दन को घिस कर भरा हुआ है। इसके मायने क्या हैं? कटोरा सुगन्ध से भरा है। मैं आत्मा हूँह्नह्नयदि आपने ऐसा समझ लिया, तो जिस तरह चन्दन से सुगन्ध ही निकलती है, मधु से मिठास ही निकलती है, उसी तरह आपसे शान्ति ही निकलनी चाहिए, आनन्द ही बाहर निकलना चाहिए। ह्नह्नस्वामी चिदानन्द

गुरु

गुरु ईश्वर ही है जो साधकों का मार्ग-निर्देशन करने हेतु मानव-रूप में अपने को प्रकट करता है। गुरु ईश्वर की कृपा का मूर्त रूप है। गुरु का दर्शन ईश्वर का दर्शन है। वह व्यक्ति और परम तत्त्व के बीच की एक कड़ी है। उसका इहलोक और परलोकह्नह्नदोनों ही लोकों में प्रवेश हो सकता है। दोनों लोकों की दहलीज पर खड़ा हुआ वह झुक कर एक हाथ से मानवों को ऊपर उठाता है और दूसरे हाथ से उन्हें शाश्वत परमानन्द तथा अनन्त सत्य-चेतना के सर्वोच्च शिखरों पर ला कर बिठा देता है।

गुरु में अतीन्द्रिय शक्ति होती है। यद्यपि वह उसका प्रदर्शन नहीं किया करता; परन्तु कभी-कभी साधकों में आस्था, उत्साह तथा परा-भौतिक (superphysical) तत्त्वों की सत्ता में विश्वास उत्पन्न करने के लिए वह ऐसा करता भी है। वह परमानन्द, ज्ञान और दया का सागर होता है। वह आपकी आत्मा की नैया का खिवैया है। वह अज्ञान का आवरण हटा कर आपके हाथों में ज्ञान की रज्जु पकड़ा देता है। जब आप जन्म-मृत्यु के सागर में डूब रहे होते हैं, तब वह

इस रज्जु के सहारे आपको उस सागर से बाहर निकाल लेता है।

गुरु के सान्निध्य में रहना मात्र ही आध्यात्मिक शिक्षा है। उसकी उपस्थिति मात्र ही शिष्य का उन्नयन कर सकती है।

मानव मानव से ही सीखता है; इसलिए ईश्वर गुरु के रूप में मानव के माध्यम से मानव को शिक्षा प्रदान करता है। गुरु मानव-आदर्शों की पराकाष्ठा है। वह एक ऐसा पूर्ण प्रतिरूप होता है जिसके अनुरूप उसके शिष्य अपने को बनाना चाहते हैं।

गुरु मोक्ष का द्वार है। इस द्वार से साधक को अपने ही प्रयत्नों से प्रवेश करना होता हैह्नह्नगुरु केवल सहायता प्रदान कर सकता है।

स्वामी शिवानन्द